ओशोधाम
नई दिल्ली

बार्न अगेन ग्रुप

ओशो कहते हैं : "ध्यान कोई नई घटना नहीं है; तुम उसके साथ ही इस जगत में जन्मे हो। मन एक नया घटक है; ध्यान तुम्हारा स्वभाव है। ध्यान तुम्हारी अंतस सत्ता है।" उन्होंने यह भी कहा है कि आधुनिक मनुष्य पुरानी परंपराओं की जड़ता और आधुनिक जीवन के तनावों से इतना बोझिल है कि ध्यान की निर्विचार और विश्रांत दशा तक पहुंचने से पहले, उसके लिए अत्यंत जरूरी है कि वह गहन शुद्धि की प्रक्रिया से गुजरे। इसको ध्यान में रखकर ओशो ने ध्यान की अनेक सशक्त विधियां निर्मित की हैं। साथ ही उन्होंने "ध्यान चिकित्सा समूहों" (मेडिटेशन थेरेपी ग्रुप्स) की एक नई शृंखला भी निर्मित की है। ये अद्‍भुत रूप से प्रभावकारी हैं। इन्हें सरलता से किया जा सकता है।

"ध्यान चिकित्सा समूह" का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है कि इसमें समूह की ऊर्जा हर साधक को अपनी-अपनी प्रक्रिया में गहरे जाने में सहयोग करती है। सारे संचित उद्‍वेग तिरोहित होने लगते हैं और अतीत के बोझ से मुक्त होने में मदद मिलती है। शुद्धि की प्रक्रिया से गुजरकर अब ध्यान हो सकता है। अब मौन व आनंद घट सकता है।

ओशो ध्यान चिकित्सा-समूह (मेडिटेशन थेरेपी ग्रुप्स) में प्रथम है; मिस्टिक रोज़। यह इक्कीस दिवसीय है। दूसरा है; 'नो माइंड मेडिटेशन' यह सात दिन की अवधि का है। तीसरा है; बॉर्न अगेन।

'बॉर्न अगेन' चिकित्सा समूह में साधकों को सात दिनों तक अपने बचपन में प्रवेश करने का सुअवसर मिलता है। जो भी हम करना चाहते थे और नहीं कर पाये थे; उसे अब करना है। इसमें अपने सारे मुखौटे उतारकर रख देने होते हैं। अपने व्यक्तित्व को छोड़ना होता है। एक गैर-गंभीरता की जरूरत होती है। शुरू में यह थोड़ा मुश्किल लगता है लेकिन समूह में धीरे-धीरे यह सरल होता जाता है। खेल-खेल में हम अपने बचपन के भोलेपन में, विस्मय भाव में उतरने लगते हैं। और तब मौन सहज उपलब्ध हो जाता है।

ओशोधाम में मा धर्म ज्योति द्वारा इन सभी ध्यान चिकित्सा समूहों का संचालन काफी समय से किया जा रहा है। अगस्त माह की 12 तारीख से 18 तक चलने वाले 'बॉर्न अगेन' में यहां लगभग 35 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

इसका संचालन करते हुए मा धर्म ज्योति ने अपने प्रेम और आनंद को हम सबके साथ खूब शेयर किया।

'बॉर्न अगेन' का यहां 12 अगस्त को शुभारंभ हुआ। दो घंटे के सत्र में पहला चरण एक घंटे का था; इसमें बच्चों जैसा व्यवहार करने का निर्देश था। दूसरे चरण में एक घंटे के लिए बस मौन बैठना होता था। शेष सारे समय श्रवण ध्यान, सांध्य सत्संग, सक्रिय ध्यान, कुंडलिनी ध्यान व अन्य ध्यान विधियों का प्रयोग करवाया जाता था।

सत्र का पहला एक घंटा अपूर्व रूप से बचपन की बाल-सुलभ क्रीड़ाओं और नाचती हुई ऊर्जा से ओतप्रोत रहता था। इसमें हास्य-रुदन, चीखना-चिल्लाना, नाचना-गाना, उछलना-कूदना, कुशन से खेलना, बड़बड़ाना, लुका-छिपी इत्यादि सब चल रहा था। ध्यान मंदिर जैसे बच्चों की किलकारियों से गूंजने लगा था। सब अपने-अपने मनपसंद खेलों में मस्त थे। न कोई काम था, न ही कोई चिंता थी। हां, बस एक बात का ध्यान रखना था कि किसी दूसरे व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुंचाना था, कोई हस्तक्षेप नहीं करना था। सब अपनी मौज में बच्चों जैसे हो रहे थे। यहां का प्राकृतिक वातावरण भी खूब सहयोगी रहा। चारों ओर हरे-भरे वृक्ष, फूल, तितलियां, चिड़ियां, चांद-तारे अपना प्यार लुटाते हुए से लगे।

इसके पश्चात्‌ घंटा भर मौन ध्यान में बैठना था। यह इतना आसान था कि मन सहज ही शांत हो जाता; तनावरहित और सजग; तब होता तटस्थ अवलोकन—बिना किसी मूल्यांकन के।

'बॉर्न अगेन' के संग हमारे सात दिनों का सफर आनंदपूर्ण रहा। इस दौरान जिस स्वाभाविकता को जिया, जिस सजगता को जाना, जिस रूपांतरण से गुजरे... प्यारे सद्‍गुरु के चरणों में हमारा अहोभावपूर्वक शत-शत नमन।

प्रिय मित्रों, आप सभी को आमंत्रण है—ओशो ध्यान चिकित्सा समूहों में आकर अपने भीतर के रूपांतरण व जागरण के लिए... अपने अंतस आकाश का अनुभव करने के लिए... इस आनंद-उत्सव में सम्मिलित होने के लिए...।

— मा बोधि शशि

ओशो ध्यान शिविर

ओशोधाम में गत 26 से 28 अगस्त को घटित ग्रीष्म ऋतु का यह अंतिम ओशो ध्यान शिविर नृत्य और हास्य का अनूठा संगम था। तंत्र-प्राण-ऊर्जा से अनुप्राणित साधकों ने हर संध्या ओशो को बड़े प्रोजेक्टर पर निहारते हुए श्रवण का आनंद लिया। ओशो के टेप प्रवचन तथा वीडियो प्रवचनों द्वारा हंसी के ठहाकों से खनखनाता ध्यान का शीतल वातावरण अपूर्व ऊर्जा लिये हुए था। ध्यान की गहराई और नृत्य की खिलावट का एक अपूर्व संतुलन पूरे

ध्यान-शिविर में बना रहा। इस शिविर का संचालन स्वामी चैतन्य कीर्ति द्वारा हुआ। मा दक्षिणा ने साधकों को नो-डायमेंशन ध्यान का प्रयोग करवाया। शनिवार की रात्रि को संन्यास-दीक्षा उत्सव में ऊर्जा अपने शिखर पर थी। शिविर में दिल्ली, पंजाब-हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार तथा दक्षिण भारत से आए साधकों ने भाग लिया।

मुलुंड, मुंबई

दिनांक 21 जुलाई, गुरुवार शाम 4.30 बजे से मुलुंड (वेस्ट) के विशाल एवं भव्य सेरीमोनियल

बैंकेट हॉल में गुरुपूर्णिमा उत्सव अत्यंत उल्लास, उमंग और उत्साह से मनाया गया। इसमें लगभग 175 मित्रों ने सम्मिलित होकर ध्यान ऊर्जा का आनंद लिया। विशाल पर्दे पर ओशो के हास्य रंग से सराबोर प्रवचन नं.11 "प्रीतम छबि नैनन बसी" पूर्ण रूप से प्रदर्शित किया गया। मित्रों ने ठहाके लगाकर उसका आनंद लिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में ओशो आनंद अभियान, मुंबई के स्थापक एवं संचालक स्वामी विट्ठल ने "गुरु महिमा" का वर्णन करते हुए सुंदर समा बांध दिया। नटराज ध्यान जैसे ध्यान प्रयोगों में नृत्य में लीनता के द्वारा मित्रों ने अद्वैत की अनुभूति पाई। अंत में कीर्तन ध्यान में सभी मस्त हो उठे। स्वामी विट्ठल ओशो का रोब एवं ओशो के चरण लाए थे। सभी ने अत्यंत श्रद्धा व प्रेम से उनके दर्शन किए। उनका संस्पर्श उन्हें रोमांचित कर जाता था।

कार्यक्रम को सफल बनाने में स्वामी सुनील, दिलीप, यशवंत, आनंद ऋषि, जीतू, मा जयू का योगदान रहा। ओशो बिल्डर्स के श्री शांतिभाई ठक्कर ने आर्थिक सहयोग दिया। रात्रि 10.30 के पश्चात् ओशो महिमा को हृदय में समाये सभी प्रस्थान कर गये।

उल्हासनगर

24 जुलाई को उल्हासनगर में मुक्ति किरण मंदिर, दिनभोज भवन के भव्य, आकर्षक, सुविधासंपन्न हॉल में एक दिवसीय ध्यान शिविर एवं गुरुपूर्णिमा उत्सव का आयोजन अत्यंत

सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन स्वामी गुरु प्रकाश एवं स्वामी गिरधारी ने किया। सुबह 7.30 बजे सक्रिय ध्यान से शिविर का शुभारंभ हुआ। नाश्ते के बाद 'सुनो भाई साधो' प्रवचन नं.-4 द्वारा गुरु-शिष्य महिमा पर ओशोवाणी गूंजी। दोपहर विश्रांति के समय 'लोभ—अधर्म का मूल' पर ओशो संदेश प्रसारित हुआ। स्वामी विट्ठल ओशो का रोब एवं ओशो के चरण मुंबई से लाये थे। उनकी स्थापना की गई।

समग्र शिविर का सफल और सुफल संचालन स्वामी विट्ठल ने किया। उन्होंने साधकों की समस्याओं का ओशो निर्देशानुसार समाधान किया। पूरे दिन में अनेक-अनेक, छोटे-छोटे ध्यान प्रयोग हुए, जिसमें सभी शिविरार्थी पूर्ण रूपेण सहभागी हुए। समग्र ध्यान मंदिर ध्यान की तरंगों से लबालब हो उठा। जिबरिश, विपस्सना, झा-झेन, लाफिंग, ओमृ, प्रार्थना, कीर्तन, ओमृ मणि पदमे इत्यादि ध्यान प्रयोग हुए। अंत में संन्यास दीक्षा उत्सव के साथ शिविर का समापन हुआ।

जामनगर, गुजरात

ओशो सागर ध्यान केन्द्र, जामनगर की ओर से एक दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आरंभ अगली रात को गौरी शंकर ध्यान से किया। दूसरे दिन सक्रिय, नादब्रह्म, नटराज, कुंडलिनी इत्यादि ध्यान प्रयोग हुए जिसमें साधकों ने बड़े प्रेम से हिस्सा लेकर

आनंद लिया। शाम को हुए कीर्तन ध्यान में ध्यान की गहराई और मस्ती में साधकों को ले जाया गया।

इस शिविर में 60 ओशो प्रेमी व संन्यासी सम्मिलित हुए। शिविर का संचालन स्वामी आनंद सागर ने किया।

जबलपुर, म.प्र.

ओशो अमृतधाम, देवताल जबलपुर में दिनांक 13 से 23 अगस्त ओशो स्वदिशा बोध अभियान का आयोजन हुआ। जिसमें भारत के विभिन्न प्रांतों से आये मित्रों ने भाग लिया।

शिविर के शुरू में साधकों को ओशो द्वारा रचित विभिन्न ध्यान प्रयोग करवाये गये। जिससे साधकों के तन, मन, प्राण शुद्ध होकर एक नयी आभा और आनंद से भर गये। द्वितीय चरण में साधकों को दृष्टा, साक्षी और मौन के गहरे ध्यान प्रयोग करवाये गये, जिसमें डूबकर सभी मित्रों ने अंतर की खोज का गहरा अनुभव लिया और स्वयं को धन्य किया।

— स्वामी चैतन्य शिखर

जबलपुर, म.प्र.

दिनांक 14 एवं 15 अगस्त को ओशो गंगोत्री ध्यान केन्द्र, 19 अवधपुरी, ग्वारीघाट, जबलपुर में डॉ. मा प्रेम अर्चना तथा स्वामी आनंद उत्सव के संचालन में दो दिवसीय ध्यान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में ओशो की विविध ध्यान विधियों का प्रशिक्षण भी दिया गया। केन्द्र संचालक स्वामी आनंद नसीम (77 वर्ष) तथा मा बोधि जागृति (73 वर्ष) पुनः युवाओं सी ताजगी पा गये।

इस शिविर की गहराइयों को देखते हुए संन्यासी मित्रों ने प्रतिमाह दूसरे शनिवार और रविवार को दो दिवसीय ध्यान शिविर गंगोत्री ध्यान केन्द्र में रखने का तय किया है।

तपोवन, नेपाल

19-21 अगस्त को ओशो तपोवन, नेपाल में एक साधना शिविर का आयोजन हुआ। अन्तर-रूपांतरण की इस यात्रा में न केवल भारत और नेपाल के बल्कि हॉलैंड, इंगलैंड, कोरिया जैसे देशों के मित्रों ने भी बढ़-चढ़ कर

भाग लिया। ओशो तपोवन अब अपनी अन्तर्राष्ट्रीय छवि की ओर अग्रसर है। खुदा की तलब जब आत्मा की प्यास बन जाए तो प्यासे होंठों पर परमात्मा के नूर का जाम कैसे बिखरता है यह ओशो का ही कमाल है। पूर्णिमा की रात्रि संन्यास की बेला मानो ओशो ने चांद की सुराही में मीरा के घुंघरूओं को भर इस ध्यान मंदिर में बिखेर दिया हो। आनंद-उत्सव-मस्ती से भरे लोग देर रात तक नाचते रहे। 12 मित्रों ने संन्यास लिया।

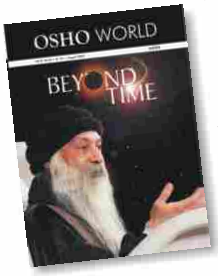

Price Rs. 10/-

Annual subscription including postage

In India
Ordinary Post: Rs. 110/- Registered Post: Rs. 330/- Courier: Rs. 500/-

Abroad
Air Mail: Rs. 1500/-

मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट
OSHOW ORLD FOUNDATION
के नाम भेजें।

Send money order/DD favouring OSHO WORLD FOUNDATION payable in New Delhi. Sorry no credit cards/cheques or currency. Please mention your name and address on the reverse of the DD.

OSHO WORLD NEWSLETTER

Annual Subscription form

Name: . . . .
Please fill in CAPITAL LETTERS only

Address: . . . .

. . . .

. . . . Pin Code: . . . .

Phone: . . . . E-mail: . . . .

I am enclosing herewith DD no . . . . .drawn on . . . .

(specify bank): . . . .(specify branch): . . . .

for Rs.: . . . . Number of Subscriptions: . . . .

On account of OWP/OWL for the period From .... To ....

Signature

OSHO WORLD FOUNDATION
C-5/44, Safdarjung Development Area, New Delhi-110016
Phone: 91-11-26964533, 26862898, contact@oshoworld.com, www.oshoworld.com

हस्तिनापुर, मेरठ

पौराणिक नगरी हस्तिनापुर में प्रतिमाह त्रिरात्रि ध्यान साधना का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आने वाले साधक चंद्रमा के साथ रात्रि में ध्यान प्रयोगों से गुजर रहे हैं। ओशो पूर्णिमा ध्यान मंदिर एवं हस्तिनापुर की प्रकृति के सहयोग के साथ-साथ किसी भी प्रकार का कोलाहल न होने से उपस्थित पंछियों एवं झिंगुरों की आवाजें ध्यान में प्रवेश के लिए सहयोग प्रदान करती हैं। स्वामी वीत विचार, अंतर निनाद, चिदानंद एवं स्वामी विद्यासागर के पारस्परिक सहयोग द्वारा यह गतिविधि सुचारू रूप से चलायी जा रही है।

– मा रश्मी, हस्तिनापुर

मुंबई

स्वामी प्रबुद्ध देवालय : देहत्याग-उत्सव

ओशो धर्मदीप ध्यान केन्द्र, घाटकोपर, मुंबई के सहयोगी संचालक स्वामी प्रबुद्ध देवालय गत **4** जून को देह-मुक्त हुए। मुंबई के संन्यासी मित्रों ने उत्सव के साथ उन्हें भावपूर्ण विदाई दी। स्वामी देवालय ने बहुत प्रेम व श्रम के साथ सदा केन्द्र संचालन में अपना योगदान दिया था, जो कि अविस्मरणीय है।

ओशो धर्मदीप ध्यान केन्द्र में हर सोमवार और गुरुवार को नादब्रह्म ध्यान तथा सायं को **8.30** से **9.30** तक आडियो टेप पर ओशो का प्रवचन होता है। हर महीने के पहले रविवार को **1** से **8** बजे तक मौन ध्यान होता है।

विशेष जानकारी के लिए संपर्क-सूत्र
मा मंजुला भारती
12 आनंद मिलन, सैकेंड फ्लोर,
वल्लभ बाग लेन, **353**-B-**35**
घाटकोपर, मुंबई-**77**

हिन्दी मासिक पत्रिका

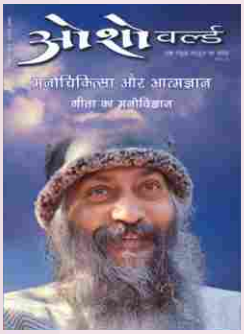

मूल्य 20/-रुपये

वार्षिक सदस्यता-फार्म डाक खर्च सहित

भारत में	
साधारण डाक	: 220 रुपये
रजिस्टर्ड डाक	: 430 रुपये
कूरियर सेवा	: 500 रुपये

भारत से बाहर	
एयर मेल	: 1500/- रुपये

ओशो वर्ल्ड
एक संबुद्ध सद्गुरु का संदेश

Subscription No.:
वार्षिक सदस्यता-फार्म

Name: . . . .

Address: . . . .

. . . .

. . . . Pin Code: . . . .

Phone: . . . . E-mail: . . . .

I am enclosing herewith Cash/Cheque/Mo/DD no.... . . . . . .drawn on . . . .

(specify bank): . . . .(specify branch): . . . .

for Rs.: . . . . Number of Subscriptions: . . . .

Signature

'निवेदन है कि ओशो वर्ल्ड पत्रिका अथवा ओशो वर्ल्ड न्यूज़ हेतु अपना सदस्यता शुल्क माह की 15 तारीख तक भेज दें। ताकि अगले माह से आपकी सदस्यता आरंभ हो सके।'

OSHO WORLD FOUNDATION
C-5/44, Safdarjung Development Area, New Delhi-110016
Phone: 91-11-26964533, 26862898, contact@oshoworld.com, www.oshoworld.com